major Semester-1 2025-2027 - DATE - 17/02/26

Nature of Emotions.

संवेगों का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है। मनुष्यों के बहुत से कार्य के अभिप्रेरक संवेग है। जैसे दूसरों पर स्वयं को न्योछावर करने, वीरता और शौर्य के कार्य करने में मनुष्य की प्रवृत्ति अथवा विचार से नहीं बल्कि संवेगों से ही अभिप्रेरणा मिलती है। संवेग के बिना जीवन नीरस होता है। व्यक्ति के परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया करने की अभिप्रेरणा भी संवेग द्वारा प्राप्त होती है। यह सबके अनुभव की बात है कि संवेगात्मक अवस्था में शक्ति संचालन बढ़ जाता है। क्रोध या उत्साह आने पर मनुष्य ऐसे साहसिक कार्य कर बैठता है जो सामान्य मानसिक दशा में कभी नहीं कर सकता। प्रेम की संवेगात्मक अवस्था में व्यक्ति प्रेमपात्र के लिए बड़े महान त्याग कर गुजरता है जिनको वह साधारण दशा में कभी नहीं कर सकता। संवेग में जान से बालकों के लिए बड़े से बड़े त्याग कर देता है।

संवेगावस्था में कुछ व्यक्ति होश खो समझ के लिए अपनी बुद्धि पर से नियंत्रण खो देते हैं। नियंत्रण खो देने के कारण व्यक्ति कुछ उचित काम करता है तो कुछ अनुचित काम करता है। क्रोध आने पर व्यक्ति अनुचित काम कर बैठता है। संवेगावस्था अत्याधिक प्रबल होने पर व्यक्ति की दशा पागल जैसी हो जाती है। उस समय उसे अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं होता, वह बुरे काम भी उसी तरह कर सकता है। जिस तरह अच्छे काम कर सकता है। इस प्रकार मानव कभी कुछ संवेगों से ऊंचाइयों तक पहुंचता है।

संवेग शब्द का अंग्रेजी समानार्थक इमोशन है। इमोशन शब्द लैटिन भाषा के इमोवेयर शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ - हिला देना या उत्तेजित कर देना है। संवेग मनुष्य को झकझोर देता है अपितु किसी व्यक्ति - विशेष को देखकर, उसकी मुट्ठियाँ भिंच - जाती हैं। दांत - किटकिटाने लगते हैं माथे - पर सलवटें पड़ जाती हैं, उसकी पूरी शारीरिक उत्तेजित - सा प्रतीत होता है। संवेग - मनुष्य को क्रियाशील बना देता है। मनुष्य की संपूर्ण - संवेग - की अवस्था में बिगड़ जाता है। जिस कारण व्यक्ति - की [illegible] उचित प्रकार से कार्य नहीं कर पाते, परन्तु सदैव यह आवश्यक नहीं कि संवेग कार्य - में बाधक हो। कभी - संवेग मनुष्य जीवन में सहायता करते हैं। वही [illegible] और व्यक्ति को संवेगों से अद्भुत शक्ति कार्य - की अभिव्यक्ति भी मिलती है। कभी कभी प्रेम के वशीभूत होकर कुछ पुरुष अपना मस्तिष्क समर्पित कर देते हैं तो प्रकृति के सुबक प्रेम की अभिव्यक्ति से उन्नति की [illegible] प्राप्त कर लेते हैं। यह बात बिल्कुल ठीक है कि जो विद्यार्थी से जो कार्य किया जाता है अथवा भाव प्रकट होते की शक्ति बढ़ती कर लेता है। संवेग जीव की शक्ति को उत्तेजित करते हैं और आपातकाल में उसकी बड़ी सहायता करते हैं। संवेग की अवस्था में मनुष्य ऐसे कार्य करता है जो वह सामान्य अवस्था में नहीं कर सकता। लेकिन कभी कभी संवेग के कारण जीव स्वतन्त्र [illegible] हो जाता है और सामान्य क्रियाएँ भी नहीं कर सकता, कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि संवेग और प्रेरणा में कोई अन्तर नहीं है।

[illegible]